WLC15-1-3 HI

क्या परमेश्वर का अस्तित्व है? परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस - प्रोग्राम 3

अनाऊंसर: आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, क्या परमेश्वर अस्तित्व में है? हालही में किए गए प्यु सर्वे से प्रकट हुआ है, 5 में से 1 से भी ज्यादा अमरीकी अब खुद को नास्तिक समझते हैं/ एग्नोस्टीक या कोई खास नही समझते हैं, शायद आप खुद पूछ रहे हो, क्या परमेश्वर का अस्तित्व् है? कौनसे फिलोसोफिकल और साइंटिफिक बहस क्या हैं, जो दिखाए कि परमेश्वर का अस्तित्व है? आज मेरे मेहमान जो इन सवालों का जवाब देगे वो हैं फिलोसोफर डॉक्टर विल्यम लैंक्रेग/ जिन्हें बहुत से लोगों ने हमारी पीढ़ी के विख्यात मसीही फिलोसोफर के रूप में जाना है, और इन्होने बहुत से विख्यात नास्तिक से बहस की है, जो संसार के विख्यात यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं, डॉक्टर क्रे के पास फिलोसोफी में पी एच डी है, बरमिंगहम इंग्लैंड साथ ही डॉक्टर ऑफ़ थियोलोजी डिग्री, म्युनिक की यूनिवर्सिटी से, ये रिसर्च प्रोफेसर ऑफ़ फिलोसोफी, टैलबोट स्कुल ऑफ़ थियोलोजी में, और ये फाउंडर हैं, रिजनेबल फेथ डॉट ओर्ग के/ इन्होने 30 से भी ज्यादा किताबों को लिखा और एडिट किया है और फिलोसोफी और थियोलोजी में 100 से भी ज्यादा प्रोफेशनल लेख लिखे हैं, इन की दो विख्यात किताबें हैं, रिजनेबल फेथ और ऑन गार्ड/

अनाऊंसर: आज हम इस सवाल को देखेगे की संसार की शुरुवात परमेश्वर के अस्तित्ब के बारे में मजबूत सबूत है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये बहस सरल रूप में बनाई गई है, पहली बात तो ये है कि जिसका भी अस्तित्व शुरू होता है, उसका कारण है/ नबंर दो, कि ये संसार अस्तित्व् में आया और इन तीन बातों के कारण व्यवहारिक रूप में तीसरी बात है, इसलिए संसार का एक कारण है/

अनाऊंसर: क्यों इस सरल विवाद का फिलोसोफिकल और साइंटिफिक सपोर्ट है/ और क्यों ये बहस इस निष्कर्ष पर आती है कि परमेश्वर का अस्तित्व है/ हम आपको न्योता देते हैं कि विशेष प्रोग्राम में जुड़ जाए, द जॉन एन्करबर्ग शो में/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हूँ जॉन एंकरबर्ग, आज मेरे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद, मेरे मेहमान हैं, फिलोसोफर विलयम लैंक्रेग, जिन्हें दुसरे फिलोसोफर ने इनके अकेडमिक काम के कारण इन्हें टॉप 1 % में रखा है पश्चिमी संसार के प्रक्टिसिंग फिलोसोफर ने/ मैं चाहता हूँ कि आप कुछ पल के लिए इस बारे में सोचिए/ आज आप इन्हें सुननेवाले हैं, और हम इस सवाल को देखेगे,क्या परमेश्वर के अस्तित्व के लिए सबूत हैं, और डॉक्टर क्रेग विश्वास करते हैं कि संसार का अस्तित्व ही, इस बात का मजबूत सबूत है कि परमेश्वर अस्तित्व में है जिसने इसे बनाया है/

अब दोस्तोंयदि आप ऑन्लाइन जाते हैं, और बिल क्रेग का नाम खोजते हैं, और कोस्मोलोजिकल आर्गुमेंट के बारे में देखते हैं, तो आप पाएगे की आधुनिक फॉर्म जिसके बारे में आज हम चर्चा करेगे, ये तो सबसे पहले इन्होने अपनी किताब में बताया था, द कालाम कॉस्मोलोजीकल आर्ग्युमेंट में 1979 में, मैं चाहता हूँ कि आप जान ले, माइकल मार्टिन जो बोस्टन यूनिवर्सिटी के हैं, उन्होंने खा की डॉ क्रेग के रिवाइज्ड आर्ग्युमेंट ये तो कन्टेपटऋ थियोलोग्जिक्ल फिलोसोफी में सबसे सोफिस्टिकेटेड हैं/ इस बहस के बारे में बहुत से लेख लिखे गए हैं, जो इन्होने 1979 में बताया था, उस समय से लेकर अब तक के सारे फिलोसोफर बहस से ज्यादा इस पर बहस हुई है/ और डॉ. क्रेग मैं बहुत खुश हूँ कि आज आप यहाँ आए/

दोस्तों में शुरू करना चाहता हूँ एक महान वीडियो क्लिप दिखाने के द्वारा/ जो सरल शब्दों में परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बताएगी/ ये वीडियो क्लिप डॉ क्रेग की आर्गेनाईजेशन द्वारा बनाई गई है, रिजनेबल फेथ डॉट ओर्ग, मैं चाहता हूँ कि आप इसे देखिए

अनाऊंसर: क्या परमेश्वर अस्तित्व में है? या केवल भौतिक संसार ही है, जो पहले था, और हमेशा रहेगा?/ इस सवाल को जवाब देने का एक तरीका है, द कॉस्मोलॉजिकल आर्गुमेंट, ये इस तरह होता है

1. जो भी अस्तित्व में आया है उसका कारण है
2. संसार अस्तित्व में आया
3. इसलिए इस संसार का कारण है

क्या ये पहली बात सच है? चलिए देखते हैं, ये विश्वास करना कि कुछ भी बिना कारण से अतित्व में आया है, ये तो जादू पर विश्वास करने से भी बढकर है/ जादू में कम से कम ये जादूगर की टोपी से आता है/ और यदि कुछ शून्य में से आ सकता है, तो हम इसे हर समय होते हुए क्यों देखते हैं? नही, प्रतिदिन का अनुभव और साइंटिफिक सबूत, हमारी पहली बात को साबित करते हैं, यदि किसी का अस्तित्व है तो उसका कारण जरुर होगा/

लेकिन हमारी दूसरी बात के बारे में क्या? क्या संसार शुरू हुआ या हमेशा इसका अस्तित्व था? नास्तिक खासकर कहते हैं, कि संसार यहाँ हमेशा से रहा है/ संसार तो बस यहाँ है/ और केवल यही है/

चलिए पहले हम थर्मोडाईनॅमिक्स के दूसरे नियम को देखते हैं/

ये हमें बताता है की संसार धीरे धीरे युज़ेबल एनर्जी से धीरे धीरे चलता है/ और यही बात है/

यदि ये यूनिवर्स हमेशा से होता, तो अब तक इसकी युज़ेबल एनर्जी खत्म हो जाती/ दूसरा नियम ये दिखता है कि संसार की एक निश्चित शुरुवात है/ ये आगे जाकर अद्भुत साइंटिफिक खोज के द्वारा साबित किया गया/ 1915 में अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपनी जनरल थेयऋ ऑफ़ रिलेटिविटी प्रस्तुत की/ इसके कारण हम पहली बार संसार के भूतकाल के इतिहास के बारे में अर्थपूर्ण तरीके से बातें कर पाए/ आगे एलेग्जेंडर फ्रीडमन और जोर्ज लेमेट्रा, दोनों आइंस्टीन ने इक्वेजन से काम कर रहे थे, इन्होने अनुमान लगाया कि संसार बढ़ते जा रहे हैं, फिर 1929 में,एडविन हबल ने अलग गैलेक्सी से लाईट की रेड शिफ्ट गिनी, इस अद्भुत सबूत ने केवल यही साबित नही किया की संसार बढ़ रहा है, और ये बढ़ रहा है सिंगल पॉइंट से फायनाईट पास्ट में, ये एक महान खोज थी, लगभग समझ से बाहर की थी/

कुछ भी हो, हरकोई इस फायनाईट संसार में दिलचस्पी नही ले रहा था/ और ज्यादा समय नही लगा और अल्टरनेटिव मॉडल्स अस्तित्व में आने लगे/ लेकिन एक एक करके ये मॉडल्स समय की परीक्षा में असफल रहे/ हालही में तीन विख्यात कोस्मोलोजिस्ट, अरविन्द बोर्ड, एलन गुथ और एलेग्जेंडर विलेंकन ने साबित किया कि कोई भी संसार जो सामान्य रूप में इतिहास में बढ़ रहा है, वो भूतकाल में अनंत नही हो सकता/ उसकी एक निश्चित शुरुवात होनी चाहिए/ ये मल्टीवर्स के लिए उपयोगी होता है/ यदि ये सच में है/

इसका अर्थ है की साइंटिस्ट भूतकाल के अनंत संसार में पीछे नही छिप सकते/ बचाव का मार्ग नही, उन्हें कॉस्मिक शुरुवात की समस्या का सामना करना होगा/ कोई भी पर्याप्त मॉडल की शुरुवात होनी चाहिए/ स्टैण्डर्ड मॉडल के जैसे ही/

तो ये सच में संभव है कि दोनों बहस की बात सच है, इसका अर्थ है कि इसका निष्कर्ष भी सही है/ संसार का एक कारण है, और जब कि संसार खुद को बना नही सकता है, तो ये स्पेस, समय और यूनिवर्स के परे है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब दोस्तों यदि आप ये पूऋ वीडियो क्लिप देखना चाहते हैं तो डॉ क्रेग कई वेबसाइट पर जाइए/ रिजनेबल फेथ डॉट ओर्ग पर/ और बिल मैं शुरू करना चाहता हूँ, फिर से इन तीन प्रेमिसेस को जो कालाम कोस्मोलोजिक्ल आर्ग्युमेंट बनाते हैं/ बताइए कि क्यों ये सरल आर्गुमेंट परमेश्वर के अस्तित्व के लिए मजबूत सबूत है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये आर्ग्युमेंट सरल रूप में बनाया गया है, प्रिमेस एक है कि जो भी अस्तिव में आया है, उसका कारण है, नंबर दो कि संसार अस्तित्व में आया है, और इन दो बातों से व्यवहारिक रूप में तीसरी बात आती है कि इसलिए संसार का कारण है/ और फिर कोई भी मुल्यांकन कर सकता है कि संसार के लिए क्या कारण हो सकता है, और बहुतसी थियोलोजिक्ल चौकानेवाली और अद्भुत बातें जिससे ट्रांस्सन्डेन्ट कारण आता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, हमें पहला प्रेमेस बताइए और उसके साथ कारण भी/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: पहला प्रेमेस ये है कि जो भी अस्तित्व में है उसका कारण है, मैं सोचता हूँ कि ये तो सच में अद्भुत है/ लेकिन इसके लिए हैं आपको तीन कारण बताता हूँ, पहला कारण ये है कि कोई चीज़ शून्य से नही आ सकती है/ शून्य में से कुछ नही आता/ ये संसार अस्तित्व में आने के लिए, बिना कारण से शून्य से आए, ये तो सच में, कल्पना से भी बुरा है/ याने यदि हम जादू का इनकार करते हैं, तो हमें इस विचार का इनकार करना होगा कि ये संसार ऐसे ही अस्तित्व में आया, बिना कारण/

अब कईबार दोष निकालनेवाले कहेगे, लेकिन क्वांटम फिजिक्स शून्य में कुछ चीजों को आने देता है/ सबएटॉमिक पार्टिकल्स अस्तित्व में आ सकते हैं, वैक्यूम में से रैंडम फ्लक्चुएशन के कारण/ लेकिन जॉन, ये तो जानबूझकर विज्ञान का गलत प्रकटीकरण है, क्वांटम वैक्यूम वो नही है जो लेमन सोचते हैं कि वैक्यूम है/ क्वांटम वैक्यूम तो सच में बहुत निश्चित रूप में शून्य नही है/ ये तो एनर्जी का बड़ा समुन्दर है, ये तो ऐसी एक्टिविटी हैं जो फिजिकल लॉ से चलाए चलते हैं/ ये शून्य नही है, तो लोग कहते हैं की ये पार्टिकल्स अस्तित्व नही आते हैं, ये तो केवल साइंस का दिसटोरशं हैं/ कुछ नही ये शब्द इंग्लिश शब्द में, ये तो पुरे संसार में उपयोग किया जानेवाला शब्द है जिसका अर्थ है, कि कुछ भी नही है/ याने जब हम कहते हैं कि संसार अस्तित्व में आया, शून्य से, इसका

ये अर्थ नही कि पहले कुछ नही था, संसार आने से पहले, कुछ भी नही था, याने इसका अर्थ ये है कि ये संसार के पहले कुछ था/ और कुछ नही था/ नही, इसका अर्थ है कि संसार अस्तित्व ऐसे ही नही आया/ बिना किसी कारण से, शून्य में से, सच में ऐसे कहना होगा जैसे मैंने कहा है कि ये जादू से बुरा होगा/ मैं सोचता हूँ कि ये प्रेमेस एक के लिए अच्छा कारण है/

दूसरा कारण कि जो कुछ अस्तित्व में है उसे साबित करने के लिए, यही है कि यदि कुछ भी अस्तित्व में आ सकता है, बिना किसी कारण से ऐसे ही, तो ये ऐसे होता है की ये होना ही है किसी भी चीज़ से और हर चीज़ से/ ये बिना किसी कारण से ऐसे ही अस्तित्व में नही आता है/ शून्य में से/ क्यों कोई भी याने बायसिकल, रूट बेर, और बीथोवन बिना किसी कारण से अस्तित्व में नही आते हैं/ ये केवल संसार ही क्यों है/ जो बिना किसी कारण से ऐसे ही अस्तित्व में आ गया हो/ यदि हम संसार को इस तरह से करने दे, तो सबकुछ और हर कुछ इसी तरह से हुआ, और निश्चिय ही ऐसा नही हुआ है, ये गलत है/

तीसरा कारण ये है की ये प्रिमेस है कि जो भी अस्तित्व में है उसका एक कारण है, जिसे पुरे रूप में साइंटिफिक सबूतों के रूप में देखा गया, सामान्य अनुभव से और कभी कुछ अजीब नही देखा/ ये सबूत इस तरह से बताते हैं जो साइंटिफिक नैचरलिस्ट हैं, हमारे पास ये सबसे बड़ा प्रभावित करनेवाल सबूत है, कि जो भी शुरू होता है उसका कारण होता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, बील दो फिलोसोफिकल बहस हैं और दो साइंटिफिक बहस हैं, दूसरे मुद्दे के लिए, खासकर संसार के अस्तित्व के बारे में, मुझे कुछ फिलोसोफीकल बहस के बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: पहली फिलोसोफीकल बहस तो आधारित है चीजों के असंख्य होने अस्तित्व की असंभवता पर/ अब असली असंख्य का अर्थ क्या है, खैर गणितग्य फर्क बताते हैं, श्रमता की संख्या और असली असंख्य के बीच,श्रमता की संख्या तो असंख्य होने की ओर बढती जाती है, लेकिन कभी वहां नही पहुचती, लेकिन इसके विपरीत, असली असंख्य होना तो पूरा असंख्य होना है, ये तो सच में असंख्य है, पहले ही पूरा हो चूका, अब यदि भूतकाल की कोई शुरुवात नही होती, तो सच में आज के लिए असल असंख्य घटनाएँ होती, लेकिन गणितग्य जानते हैं, कि सच में असंख्य होने की जो बात है, वो बहुत से अलग बातों की ओर लेकर जाती है, उदाहरण के लिए, असंख्य मायनस असंख्य क्या होगा? खैर गणित के रूप में आप विवादित जवाब पाते हैं, ये दिखता है कि असंख्य तो केवल एक विचार है, आपके मन में ये तो अस्तित्व में नही है, वास्तविकता में नही

है/ इसलिए जब कि भूतकाल की घटनाएँ केवल मन के विचार नही हैं, लेकिन असली हैं तो भूतकाल की घटनाएँ गिनती की जा सकती है, और इसलिए संसार अस्तित्व में आया/

दूसरी फिलोसोफीकल बहस तो आधारित है असली असंख्य को जोड़कर असंभवता को बनाने की है, एक के बाद एक सदस्य जोड़ने के द्वारा, इसे कईबार कहते हैं, संख्या को असंख्य होने तक गिनते जाना/ हम असंख्य को कभी न ही गिन सकते हैं, क्योंकि वहां पहुचने से पहले हमेशा एक और जोड़ सकते हैं/ लेकिन यदि हम अगणित तक नही गिन सकते हैं,तो हम अगणित से कैसे गिन सकते हैं? ये तो पूरी तरह गलत होगा/

उदाहरण के लिए कल्पना कीजिए कि दो गढ़ चक्कर काट रहे हैं, सूरज के और एक तो दुसरे से दो गुना ज्यादा तेज़ जाता है, जितना बड़ा घेरा होगा उतना ज्यादा उसके चक्कर का क्रम होगा याने 2 का 1, या 4 का 1, 8 का 4 और ये सब होगा/ सच में चक्र जितना बड़ा होगा/ उतना ज्यादा ये अगणित होना बढ़ेगा और ये अंत में अगणित तक बढ़ते जाएगा/ लेकिन चलिए इसे बदलते हैं कहते हैं कि वो चक्कर काट रहे हैं, अनंतकाल से/ तो किसने सबसे ज्यादा चक्कर काटे हैं? खैर गणित का जवाब यही होगा, वो समान हैं, संख्या तो बस अगणित हैं/ लेकिन ये अजीब लगता है, चक्कर जितना बड़ा होगा, तो इन के बिच की विविधता उतनी ज्यादा होगी, तो अब ये संख्या जादू के रूप में समान होगी, बस इसलिए कि वो अनंतकाल से चक्कर काट रहे हैं/

इस तरह की विविधता आगे बढकर इस बात को बताती है कि भूतकाल अगणित नही हो सकता है, इसे गणित होना होगा, और इसलिए, संसार का अस्तित्व होता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, याने डॉ फिलोसोफिकल बहस है,और आपने कहा कि डॉ साइंटिफिक बहस है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, 20 वी सदी की बातों से, ये बात सामने आई है फिजिस्क में अद्भुत रूप में और अपेक्षा नही की थी, ये साइंटिफिक सबूत है इन बातों के बारे में, कि संसार अनंतकाल से नही है, लेकिन इसकी निश्चित शुरुवात है, लगभग 14 बिलियन साल पहले, निश्चित भूतकाल में, साइंटिफिक सबूतों में पहला तो, संसार के विस्तार से आता है/ जब अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपनी नई बनाई गुरुत्वाकर्षण की थेयरी का उपयोग किया, जो रिलेटिविटी की जनरल थेयरी है, पूरे संसार के सामने बताया 1917 में, ये तो स्वागत न किया गया अनुमान था/ ये दिखता है कि संसार इस तरह के अनंत स्थिति में नही रहेगा/ ये एक तो कॉस्मिक एक्सपेनशन में होगा, या कॉस्मिक कॉन्ट्रैक्टशन में होगा/और आइंस्टीन नही जानते थे कि इन परिणामों को किस तरह से संभाले/ तो सच में अपने इक्वेशन में परेशान हो गए, कि अनंतकाल के संसार को बचाकर रख सके/

खैर 1920 के दौरान, आइंस्टीन के इक्वेशन की फेस वैल्यू लेने के द्वारा, रशियन गणितज्ञ अलेक्सजेंर फ्रिद्मान और बेल्जियम के ज्योतिष जोर्ज लेमेट ने, अलग अलग रूप में, बढने वाले संसार के मॉडल्स दिखाए/ जिनकी गणित भूतकाल में शुरुवात थी और अब वो बढ़ रहा है, और इन मॉडल्स को कहा गया है, बिग बैंग थेयरी इस संसार की शुरुवात के बारे में/

लेकिन बिग बैंग थेयरी के बारे में अद्भुत बात तो ये है, कि सारी बातों की शुरुवात में ये तो पूरी तरह से शुरू होना था/ इस संसार का/ केवल सारे तत्व और एनर्जी ही नही, जो उस पल शुरू हुए हैं, लेकिन फिजिकल स्पेस और समय, अपने आप में उस पल में शुरू हुए हैं, तो ये पूरी तरह से असंभव था कि उस समय स्पेस और तत्व और एनर्जी में पीछे जाए उस समय से भी पीछे जाए, ये तो संसार की पूरी तरह से शुरुवात थी/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: और आपके पास गुब्बारे का एक उदाहरण है जो इसे बताता है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये बहुत जरूरी है कि इस मॉडल को गलत न समझे, ये तो लेमन सामान्य रूप में जो सोचते हैं उससे भी बहुत अलग है/ ये मॉडल इसके बारे में नही बताता है कि हमारा संसार कैसे है/ किसी एक पहले से अस्तित्व रखनेवाले खाली स्थान में/ मॉडल तो उससे बहुत ही अद्भुत है, लेकिन मॉडल इस के बारे में बताता है कि जगह का बढ़ते जाना है/ अपने आप में, हमें इसके बारे में सोचना होगा/ कि यदि हम गुब्बारा ले, यदि गुब्बारे के उपर में कुछ बटन बनाए गए हैं, अब ये बटन तो गुब्बारे की सतह पर तो निश्चित रूप में बने रहते हैं/ वो एक जगह पर हैं, लेकिन जैसे गुब्बारा फूलते जाता है, तो बटन आगे और आगे और आगे बढ़ते जाते हैं, क्योंकि गुब्बारा अपने आप में बढ़ते जाता है/

अब गुब्बारे की सतह तो हमारे थ्री डायमेंशनल स्पेस जैसे है, गैलेक्सी तो सच में स्पेस में एक जगह पर हैं, लेकिन वो एक दुसरे से दूर जाते हैं, क्योंकि स्पेस अपने आप में बढ़ते जा रहा है, और इसका अद्भुत उपयोग यही होता है कि जैसे आप इस स्पेस को वापस समय में पीछे ले जाते हैं, तो गैलेक्सी तो आपस में करीब और करीब आते जाती है, जब तक कि सारी बातें एक जगह पर न आ जाए/ उसके पहले ये संसार सच में अस्तित्व में नही था/ तो ये पूरी तरह शुरुवात है स्पेस, समय, तत्व और एनर्जी इस बिग बैंग कई घटना में/

संसार की पूरी शुरुवात के बारे में उसका अनुमान, जो अब भी लगभग 100 साल बाद है, सबसे अजीब और अद्भुत समय में से गया जहाँ थेयरोटीकल और एक्सपिरियंशल फिजिक्स में उन्नति हुई है/ सच म इ सं 2003 में, तीन विख्यात कोस्मोलोजिस्ट अरविन्द बोर्ड, एलन गुथ और एलेग्जेंडर विलिंगकन ने दिखाया कि कोई भी संसार जो सामान्य रूप में कॉस्मिक एक्सपानशन की दशा में है, वो भूतकाल में अनंतकाल का नही हो सकता

है, लेकिन उसकी सटीक शुरुवात रही है, वो भी निश्चित भूतकाल में, बोर्ड-गुथ-विलिंगकन थेयरम के अनुसार, अद्भुत स्पेस और समय भूतकाल के इनफिनिटी में नही बताया जा सकता है, लेकिन उसे एक सीमा में रखना होगा,यदि वो सीमा संसार की शुरुवात है, तब संसार अस्तित्व में आया, और यदि उस सीमा के उस पार कुछ है, जिसे अब तक नही खोजा गया इस थेयरी के द्वारा बताया गया है/ तब विलिंगकन ने कहा कि वो इस संसार की शुरुवात है/ लेकिन हम वि संसार नही पा सकते हैं, जो अगणित भूतकाल के समय से अस्तित्व में है/

याने विलिंगकन तो सच में सही थे इम्प्लीकेशन सिस्टम के बारे में, उन्होंने कहा,इस तरह से कहा गया है की बहस ही एक समझदार व्यक्ति को सहमत करती है, और सबूत ही तो उसे सहमत करता है जो समझदार नही है/ जब हम सबूत को रखते हैं, तो कोस्मोलोजिस्ट कभी भूतकाल के अनंतकाल के संसार के पीछे नही छिप सकते हैं, बचाव का मार्ग नही उन्हें कॉस्मिक शुरुवात के बारे में समस्या का सामना करना होगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, आप जो कह रहे हैं कि ले लोग सुनते हैं अलग अलग थेयरीज जो वो कह रहे हैं उसे हराने के लिए/ लेकिन 100 साल से ये स्थिर रही है और इन सारे प्रपोजल को हराया है कि दिखाए कि संसार की शुरुवात है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही, 20 वी सदी की कोस्मोलोजी का इतिहास, एक तरह से देखा जा सकता है, असफल थेयरी की एक परेड के जैसे जो संसार की निश्चित शुरुवात को टालने की कोशिश करते हैं, स्थिर दशा के मॉडल्स, वैक्यूम फ्ल्पच्युएशन मॉडल्स, ऑस्लेटिंग मॉडल्स, स्ट्रिंग मॉडल्स, बार बार फिर से थेयरीटिस्ट ने निश्चित शुरुवात के बारे में टालने की कोशीश की है/ लेकिन इन में से किसी भी कोशीश ने साइंटिफिक कम्यूनिटी के मन में कोई बात साबित नही की, शुरुवात के मॉडल्स को छोड़कर/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, ये महत्वपूर्ण है, दूसरी साइंटिफिक बहस है, यूनिवर्स के थर्मोडाईनॅमिक्स, इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, यदि केवल एक साइंटिफिक कन्फर्मेशन काफी नही है, तो सच में हमारे पास दूसरा है, थर्मोडाईनॅमिक्स के नियम से/ थर्मोडाईनॅमिक्स के नियम अनुमान लगाते हैं कि क्लोज्ड सिस्टम, कहिए, ऐसा सिस्टम जिसमे एनर्जी नही रखी गई है, वो आगे जाकर धीमा होकर बंद हो जाएगा जैसे उसकी एनर्जी खत्म होती है, अब, नास्तिकवाद में संसार तो बहुत बड़ा क्लोज़ सिस्टम है, जब कि इससे भर कुछ नही है, जो इस में एनर्जी दे सके/ इसका ये अर्थ है कि काफी समय होने के बाद में ये संसार ऐसी दशा में आएगा कि

थर्मोडाईनॅमिक्स की गर्मी किसी न किसी तरह से खत्म होगी, अब यदि ये सच में होता है, कुछ निश्चित समय में, तो फिर ये पहले ही क्यों नही हुआ है? यदि संसार पहले से अस्तित्व में रहा है, अगणित समय से/ संसार तो अब अंधकार और बेकरा, बेजान और ठंडी दशा में होना चाहिए/ लेकिन ऐसा नही है, ये दर्शाता है कि ये संसार अगणित समय से अस्तित्व में नही है, लेकिन ये अस्तित्व में आया निश्चित समय पहले, जिसमे कुछ एनर्जी रखी गई, ये अभी जिस दशा में है, और ये तब से आगे बढ़ते और चलते जा रहा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, फिर आपका तीसरा प्रेमेस याने निष्कर्ष?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: याने हमारे पास दोनों फिलोसोफीकल बहस है और साइंटिफिक कन्फर्मेशन है इस दुसरे मुख्य प्रिमेस के बारे में कि संसार अस्तित्व में आया/ इन डॉ प्रिमेस से लोजिकली ऐसा होता है कि संसार के अस्तित्व का कारण है/

अब, संसार का क्या कारण हो सकता है, खैर हमने अब तक जो कहा है, इसके बहुत से चौकानेवाले गुण हैं, ये कारण अपने आप में बिना कारण से होना चाहिए/ क्योंकि इस तरह अगणित ऐसे कारण नही हो सकते हैं, याने ये बिना कारण से होना चाहिए, की संसार के आने का कारण हो/ ये समय और स्पेस से बिलकुल अलग होना चाहिए/ क्योंकि इसने समय और स्पेस दोनों को बनाया है, इसलिए ये फिजिकल नही हो सकता है/ लेकिन ये इममेटीरियल विंग होना चाहिए, जिसने संसार बनाया है, ये ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसमे हमारी कल्पना से बाहर सामर्थ हो/ की सब मैटर, एनर्जी, स्पेस और समय को पहले अस्तित्व में लाए/

और अंत में मैं कहूँगा कि ये तो कोई व्यक्ति ही होगा/ इसे और कैसे बता सकते हैं, कैसे हम शुरुवात के बारे में कुछ समय के प्रभाव पाए, उस कारण से जो अनंतकाल और हमेशा का है, यदि कारण कोई व्यक्ति नही लेकिन किसी तरह से मैकनिकल दशा है/ तो एक बार कारण देने के बाद, इफ़ेक्ट को भी देना होगा, चलिए उदाहरण के लिए पानी का बर्फ बनने कारण है की तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे जाता है, यदि तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से निचे है, अनंतकाल से/ तो ये पानी अनंतकाल से ही जमा हुआ होगा/ ये तो असंभव होगा कि पानी कुछ निश्चित समय पहले जमने लगा हो/

शुरू में कुछ समय का प्रभाव पाने के लिए याने अनंत और हमेशा के कारण से, यही है, कि वो कारण कोई व्यक्ति विशेष है/ जिसके पास इच्छा की आज़ादी है, जो समय में स्वतंत्र प्रभाव बना सकता है, बिना किसी पहले से निश्चित करनेवाली दशा के/ उदाहरण के लिए यदी कोई मनुष्य अनंतकाल से बैठा है, अपनी इच्छा से खड़ा हो

सकता है, याने यहाँ अनंत कारण से कुछ समय का प्रभाव उत्पन्न होगा/ तो हमने क इवल ट्रांससेंडन्ट कारण ही नही लाया है, इस संसार के लिए, लेकिन उसका व्यक्तिगत सृष्टिकर्ता है/

तो मैं सोचता हूँ कि ये बहस हमें विश्वास करने के लिए जगह देती है, कि पहला बिना कारण का, बिना शुरुवात का, बिना समय, बिना स्पेस, जो भौतिक नही, बहुत सामर्थी, व्यक्तिगत सृष्टिकर्ता है, इस संसार का- जिसका अर्थ सब लोग जानते हैं वो परमेश्वर है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब दोस्तों, मैं चाहता हूँ कि इस बारे में सोचिए, और आशा करता हूँ कि आप अगले हफ्ते फिर जुड़ जाएगे क्योंकि हम एक और समस्या को देखेगे, जो परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में उठती है/ ये बुराई की समस्या है, कैसे सबसे प्रेमी और सर्व सामर्थी परमेश्वर, होने देता, अनुमति देता, इस बुराई और दू:खो को जो आज हम संसार में देखते हैं/ मैं आशा करता हूँ कि आप डॉ क्रेग को सुनने के लिए जुड़ जाएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋच्ड्ढक्ष्